PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- अनेग्जीमैण्डर

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है

(4) हिकैटियस (Hecatacus)

मिलेटस नगर के निवासी हिकैटियस एक महान राजनेता और अग्रगामी भूगोलवेत्ता थे। वे छठीं शताब्दी ईसा पूर्व के यूनानी भूगोलवेत्ता थे जिन्होंने कई पुस्तकें लिखी थी जिनमें से अधिकांश प्राप्य नहीं हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'पीरिओडस' (Periodus) दो खण्डों में 520 ई० पू० में प्रकाशित हुई थी। इसका अर्थ है 'पृथ्वी का वर्णन' । पीरिओडस विश्व भूगोल का प्रथम क्रमबद्ध वर्णन है और इसी आधार पर कुछ लोग हिकैटियस को भूगोल का संस्थापक भी मानते हैं। इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में यूरोप का और दूसरे खण्ड में अफ्रीका और एशिया का वर्णन किया गया था। हिकैटियस ने अपनी पुस्तकों में सात विश्व का सामान्य सर्वेक्षण प्रस्तुत किया था और भूमध्य सागर विशेषरूप से एजियन सागर के समीपवर्ती स्थानों और प्रदेशों का तथ्यपूर्ण वर्णन किया था।

हिकैटियस ने अपने नगर मिलेटस का मानचित्र भी बनाया था किन्तु पृथ्वी की आकृति के विषय में उनकी धारणा आयोनियन दार्शनिकों की मरम्परागत विचारधारा से प्रभावित थी। वे पृथ्वी को गोलाकार और सागर सरिता से घिरा हुआ मानते थे जिसके मध्य में यूनान की स्थिति है। उन्होंने पृथ्वी को दो भागों में विभक्त किया था उत्तर की ओर यूरोप महाद्वीप और दक्षिण की ओर अफ्रीका एवं एशिया महाद्वीप।